BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

हिन्दी तथा नेपाली कहानियों में अभिव्यक्त कृषक वर्ग की समस्याएं (शिवमूर्ति तथा सानु लामा की कहानियों के विशेष सन्दर्भ में)

नुनिता राई, डॉ. आशीष पाण्डेय
हिन्दी विभाग, बनस्थली विद्यापीठ

शोध सारांश-

भारतीय समाज की प्रमुख इकाई के रूप में ग्रामीण समाज द्रष्टव्य है। इस ग्रामीण समाज के प्रमुख स्तंभ रूप में कृषक वर्ग दर्शनीय है जिनकी अपनी जीवन-शैली, आचार-विचार, संस्कृति तथा विसंगतियां आदि दृष्टिगोचर है। इसके अंतर्गत मुख्य रुप से कृषक समाज की जिजीविषा तथा उनकी समस्याएं दर्शनीय है। फलतः मैदानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में कृषक समाज विषमतापूर्ण जीवन जीने को मजबूर है। इस परिप्रेक्ष्य में हिन्दी तथा नेपाली साहित्य जगत के कहानीकारों ने अपनी लेखनी द्वारा कृषक समाज की समस्याओं का उद्घाटन किया है। जिनमें शिवमूर्ति तथा सानु लामा प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर हैं। इनकी कहानियों में स्पष्ट अनुभव होता है कि कृषक समाज का विषमताओं से भरा जीवन जितना संघर्षमय है उतना ही वह चुनौतीपूर्ण भी है। कृषक वर्ग को सूदखोरी, सामंती व्यवस्था, प्रशासन की अनदेखी जैसी सामाजिक-राजनैतिक समस्याओं का सामना तो करना पड़ता है। साथ ही कृषक वर्ग को सूखा-अकाल तथा बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का भी चुनौतीपूर्ण सामना करना पड़ता है। यद्यपि मैदानी क्षेत्रों के अतिरिक्त पर्वतीय दुर्गम क्षेत्रों में भी कृषक समाज की समस्याएं समान रूप से दृष्टिगोचर हैं। जहाँ मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में नेपाली कृषक समाज आर्थिक रूप से अभावग्रस्त दर्शनीय है।

बीज शब्द-

कृषि, कृषक, शिवमूर्ति, सानु लामा, हिन्दी, नेपाली, ग्रामीण, मैदानी, सिक्किम, पर्वतीय, अर्थव्यवस्था, आर्थिक, भारतीय, शोषण, लोक-कल्याण, अन्न-उत्पादन।

शोध आलेख-

भारतीय समाज में कृषक वर्ग का महत्वपूर्ण स्थान है। यह वर्ग भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। इन्हीं ग्रामीण क्षेत्रों में भारत की आत्मा विद्यमान मानी जाती है अर्थात् भारतीय समाज की रीढ़ माने जाने वाले इन ग्रामीण क्षेत्रों में भारत देश की आधी से अधिक आबादी निवास करती है। जिनका आर्थिक आधार कृषि है। फलतः भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख स्तंभ कारकों में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि केवल अन्न उत्पादन के कार्य के कारण ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि कृषि एक जीवन शैली है, एक दायित्व है तथा एक जीवन मूल्य के रूप में भी दृष्टिगोचर है। जिसमें ऋतु वर्णन, लोकगीत, प्रकृति पूजन, खान-पान, वेशभूषा, तीज-त्यौहार, आचार-विचार, आस्थाएं-मान्यताएं, प्राकृतिक आपदाओं, शोषण तथा लोक कल्याण की भावना आदि का वर्णन उल्लिखित है। कृषक जीवन की चेतना में केवल लोक मंगल की धारणा व्याप्त है। धन-संग्रह, भौतिकतावादी या मिथ्य-प्रदर्शन के दोहरे चरित्र का मापदंड कृषक वर्ग में दिखाई नहीं पड़ता। कृषक जीवन एक साधना है जिसका साधक कृषक निरंतर अपने कर्तव्यों को लेकर संघर्षरत है। उसे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा प्राकृतिक समस्याओं से जूझना पड़ता है। इस कारण कृषक वर्ग कभी भी दृढ़ नहीं बन सका है। किन्तु वह दुर्बल होकर भी अपनी संकल्प शक्ति तथा जिजीविषा के बल पर सदैव से संघर्षशील एवं महत्वपूर्ण दिखाई पड़ता रहा है । जिस कारण अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी द्वारा कृषक जीवन की समस्याओं, जीवन शैली तथा संघर्षों का उद्घाटन किया है। इनमें न केवल हिन्दी अपितु नेपाली भाषा जगत के कहानीकार-लेखक भी दर्शनीय हैं। इस परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के कथाकार शिवमूर्ति तथा नेपाली साहित्य जगत के कहानीकार सानु लामा मुख्य रूप से प्रासंगिक दृष्टिगोचर हैं। यह दोनों ही कहानीकार मूलतः ग्रामीण जीवन के मुद्दों को अपनी कहानियों में प्रकट करते हैं। फलतः ग्रामीण चेतना से प्रभावित होने के कारण इनकी लेखनी द्वारा कृषक जीवन की विभिन्न विसंगतियों का प्रासंगिक वर्णन हुआ है। शिवमूर्ति की कहानी 'सिरी उपमा जोग' में वे लिखते हैं – "उसने खेती-बारी का सारा काम अपने जिम्मे लेकर उन्हें परीक्षा की तैयारी

@2025 Bihar Shodh Samaagam

के लिए मुक्त कर दिया था। रबी की सिंचाई के दिनों में सारे दिन बच्ची को पेड़ के नीचे लिटाकर कुएँ पर पुर हाँका करती थी। बाजार से हरी सब्जी खरीदना संभव नहीं था लेकिन छप्पर पर चढ़ी हुई नेनुआ की लताओं को वह अगहन-पूस तक बाल्टी भर-भर कर सींचती रहती थी, जिससे उन्हें हरी सब्जी मिलती रहे। रोज सबेरे ताजी रोटी बनाकर उन्हें खिला देती और खुद बासी खाकर लड़की को लेकर खेत पर चली जाती थी। एक बकरी लाई थी वह अपने मायके से, जिससे उन्हें सबेरे थोड़ा दूध या चाय मिल सके।"[1] शिवमूर्ति अपनी कहानियों में ग्रामीण परिवेश में जिस प्रकार कृषक परिवार के जीवन का उद्घाटन करते हैं वह प्रासंगिक प्रतीत होता है। शिवमूर्ति की कहानियों में कृषक वर्ग की आर्थिक तंगी तथा कृषि से जुड़ी विषमताओं का उद्घाटन हुआ है। जो कृषक वर्ग समाज के हर तबके को अन्न-सब्जियां प्रदान करता है, उस वर्ग को स्वयं दो वक्त के अन्न के लिए संघर्ष करना पड़ता है। क्योंकि उसके द्वारा उगाई गई फसल का अधिकांश भाग साहूकारों के सूद तथा शोषण चक्र में चला जाता है। कृषक वर्ग पूँजी के अभाव में खेती के लिए साहूकारों से कर्ज लेने को मजबूर है जिसकी अदायगी न होने की सूरत में कृषक वर्ग शोषण के जाल में फंस जाता है। 'ख्वाजा ओ मेरे पीर' कहानी में ही देखें तो एक सामान्य किसान अपना राग-रंग, काम-काज सब भूलकर जमींदार के षडयंत्र में फंस जाता है। "जमींदार समझ गया। जमींदारी उन्मूलन के साथ-साथ उससे जुड़े रोब-रूतबे का भी काफी कुछ उन्मूलन हो चुका था। इसलिए फिर डराने-धमकाने या जबरन कब्जा करने का प्रयास तो नहीं किया लेकिन मुकदमा दायर कर दिया। मुकदमेबाजी का अखाड़ा मामा के लिए बिल्कुल अनजाना था। यहाँ के दाँवपेंज, पैंतरे, पिचाल के बारे में कभी सुना ही नहीं था। बार-बार पटकनी लगी गाना-बजाना, राग-रंग पहलवानी, अखाड़ा-सब भूल गया। उन खेतों को बचाने के लिए मामा बारह बरस मुकदमा लड़े। "[2] अतः हिन्दी कहानियों में अनेक लेखकों ने अपनी चेतना अनुसार कृषक वर्ग की समस्याओं का प्रकटीकरण किया है। शिवमूर्ति इस परिप्रेक्ष्य में अग्रणी दर्शनीय हैं। किन्तु न केवल हिन्दी अपितु नेपाली कहानियों में भी कृषक वर्ग की समस्याओं का उल्लेख दर्शनीय है। सानु लामा इस सन्दर्भ में प्रमुख नेपाली कहानीकार दर्शनीय हैं। जिन्होंने सिक्किम के पर्वतीय ग्रामीण परिवेश में निवास करने वाले नेपाली कृषक वर्ग की समस्याओं का प्राकट्य अपनी कहानियों में किया है। हालाकि सानु लामा ने कृषकों के साथ-साथ मजदूरों की समस्याओं का भी उल्लेख किया है। किन्तु ये मजदूर भी भूमिहीन होने की दशा में मजदूर बनने को मजबूर दर्शनीय हैं। फलतः सानु लामा कृषक वर्ग में व्याप्त अस्मिता के संकट का भी मार्मिक वर्णन करते दर्शनीय है।

ठेकेदारों द्वारा एकाधिकार व सामंती शोषण का वर्णन सानु लामा ने 'कमला' कहानी में करते हुए श्रमिक वर्ग की समस्या का वर्णन करते लिखा है, "कमला कथामा काजी ठेकादारको एकाधिककार तथा सामन्तीहरूको अन्याय, अत्याचार, शोषणको थिचोमिचो र जनसाधारणले भोग्नुपरेको कष्टमय जीवनको चित्रण भएको छ। तत्कालीन सिक्किममा ठूला बड़ा, सामन्ती, काजी-ठेकेदार, सामन्ती शोषकहरूका हातमा नै कानून व्यवस्था रहेको यथार्थ सानु लामाको कमला कथाबाट स्पष्ट हुन्छ। ठूलो माछाले सानो माछालाई खान्छ भने झैं तत्कालीन सिक्किममें समाजमा ठूला भनाऊँदा काजी ठेकेदारहरूले निम्न वर्गका मानिसलाई दवाउने गरेको र उनीहरू कमारा-कमारी बसेर आफ्नो हातमुख जोर्न बाध्य हुनु परेको कुरो यस कथामा प्रस्तुत गरिएको छ।"[3] कमला कहानी में काजी ठेकेदार के एकाधिकार और सामंतों के अन्याय, अत्याचार शोषण के दबाव और जन-साधारण द्वारा भोगे हुए कष्टमय जीवन का चित्रण है। तत्कालीन सिक्किम में बड़े-बड़े लोग सामंती काजी-ठेकेदार, सामंती शोषकों के हाथ में ही कानून व्यवस्था के होने का यथार्थ वर्णन सानु लामा की कहानी 'कमला' से स्पष्ट होता है। बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है, कहावत तत्कालीन सिक्किम के समाज में दृष्टिगोचर है जहाँ काजी-ठेकेदारों ने निम्न वर्ग के जनमानस को दबाकर तथा कमारा-कमारी (नौकर) बनाकर अपने हाथ-मुंह जोड़ने के लिए बाध्य करते थे। सानु लामा ने प्रस्तुत कहानी में सिक्किम की ग्रामीण जनता की बेबसी-लाचारी तथा शोषण का जो चित्रण किया है, उसकी पृष्ठभूमि में सिक्किम की सामंती व्यवस्था तथा प्रशासनिक भ्रष्टाचार दृष्टिगोचर है। जिसके कुचक्र से सिक्किम के ग्रामीण कृषक-मजदूर वर्ग शोषित दृष्टिगोचर हैं।

सिक्किम की ग्रामीण परिस्थितियां कृषक वर्ग के अनुकूल नहीं है वहाँ पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण खेती विस्तृत नहीं हो पाती है। सालों-साल फसल खड़ी नहीं रहती। फलतः कृषकों को रोज़गार के लिए नगरों में जाना पड़ता है और जो लोग गाँव में रहते हैं वे पशुपालन, खेतों में मौसमी सब्जियां-फल उगाकर तथा मजदूरी आदि का काम करके अपना जीवन यापन करते हैं। इसके अन्यत्र कृषक वर्ग की विसंगतियों

का उल्लेख करते हुए सानु लामा लिखते हैं, “सुनसान वातावरण थियो। रुख-पात, खेतबारी, घर-कटेरोसहित पानीको धरा समेत लोलाएको प्रतीत हुन्थ्यो। मकै छर्ने काममा व्यस्त रहेका चार-पाँचजना गाऊँहरू जोतेको बारीको न्यानो माटोमा बिसाइरहेका थिए। समयामा पानी परिदिएकोले, मौसम अनुकूल रहेकोले मकैको उब्जनी राम्रो हुनेबारे तिनीहरू कुरा गर्दै थिए। ती गाऊँलेहरूमाझ भीम काका त्यहाँ केंद्र बिंदु थियो।”[4] फलतः सानु लामा के अनुसार शिवमूर्ति के ग्रामीण समाज से नेपाली समाज पूर्णतः भिन्न नहीं है। कृषि संबंधी पक्षों को लेकर ही तुलना करें तो दोनों कहानीकारों की लेखनी में इस संदर्भ में समानता देखी जा सकती है। इस परिप्रेक्ष्य में सानु लामा कहते हैं, सुनसान वातावरण था। पेड़-पत्ते, खेती-बाड़ी, घर-कटेरो (पशु का घर), सब पानी की धारा के समान प्रतीत होता था। मक्का बोने वाले लोग व्यस्त होकर चार-पांच गांव के लोग खुदी हुई मिट्टी में बैठे थे। समय पर वर्षा होने के कारण मक्का की खेती अच्छी होगी इसी बारे में बात कर रहे थे। वहाँ गांव के लोगों में भीम काका उस समय केन्द्र बिन्दु थे।

सानु लामा सिक्किम के ग्रामीण जनमानस की गंभीरता से संवेदनात्मक पड़ताल कर इनके आर्थिक विषमता के करण पलायन को अपनी कहानियों में प्रकट करते हैं। यद्यपि सानु लामा का मानना है कि सिक्किम का कृषक वर्ग रोजगार के लिए यदि पलायन भी करता है तो भी वह अपने ग्रामीण जीवन से जुड़ा रहता है। तथा कृषि का कार्य पूर्ण मनोभाव से करते हैं। जैसाकि सानु लामा लिखते हैं कि “गाऊँवासीहरू विशेषतः मकै छर्नमा व्यस्त छन्। गहुँको हरियो खेतीले ढाकिएको भूभागबाहेक बाँकी कृषि भूमि फाँड़फुँड गरी, डड़ेलो सल्काई, जोती-खनी मकैका लागि तयार थियो। आलो माटोबात निस्केको ताजा गन्ध वातावरण जताततै थियो।”[5] सानु लामा सिक्किम की प्रकृति, खेत-खलिहान तथा खेती-बाड़ी के कामकाज का अपनी कहानियों में उल्लेख करते हैं। जिनका वर्णन करते हुए सानु लामा नेपाली जनमानस के कृषि संबंधी पक्ष का वर्णन करते हुए लिखते हैं, गांववासी मक्के बोने में व्यस्त हैं। गेहूं की हरियाली से पूरा खेत ढका हुआ है बाँकी कृषि भूमि को साफ करके उसमें आग जलाकर हल चलाने के लिए सपाट तैयार था। वहीं कच्ची मिट्टी से निकलने वाली ताजा गंध वातावरण में फैली हुई थी। अतः विकट परिस्थितियों एवं विषमताओं के मध्य सानु लामा सिक्किम के प्राकृतिक दृश्यों का उल्लेख कर पाठक वर्ग को मनमोहक दर्शन कराते हैं। जिसके अंतर्गत सिक्किम का कृषक वर्ग अपनी विभिन्न समस्याओं के उपरांत भी हरी-भरी फसलों-खेतों को देखकर हर्षित है। जिस आधार तत्त्व के बल पर सिक्किम के कृषक वर्ग अपनी जिजीविषा को सहेज पाया है। इसी प्रकार शिवमूर्ति अपनी हिन्दी कहानियों में कृषक वर्ग की समस्याओं का उल्लेख करते हुए उनके कृषक से मजदूर बन जाने की समस्या का उद्घाटन बड़े ही मार्मिक ढंग से करते हैं। केशर कस्तूरी कहानी के ग्रामीण परिवेश में केशर का पति रोज़गार की तलाश में चंडीगढ़ जाता है जहाँ उसे रंगाई-पुताई का काम मिल जाता है। किन्तु कुछ समय बाद उसकी एक दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी पर चोट लग जाती है। जिस कारण उसका रोज़गार उससे छीन जाता है। “केशर का आदमी चंडीगढ़ में मकान पुताई का काम कर रहा था। पच्चीस-तीस रूपए रोज मिल जाते थे। लेकिन दो महीना पहले सीढ़ी से गिर गया। पीठ के बल! रीढ़ की हड्डी में ईंट से चोट लग गई। महीना भर चारपाई पर पड़ा रहा। दबाई में बड़ा पैसा लगा। डॉक्टर ने भारी काम करने से मना कर दिया। और इसी बीच भाइयों ने बंटवारा कर लिया।”[6] फलतः केशर पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ता है। यह एक सामान्य कृषक परिवार की विडम्बना कही जा सकती है कि वह कृषि के लिए पूँजी न होने पर काम की तलाश में शहर जाता है और वहाँ भी वह आर्थिक विपन्नता से निजात नहीं पा पाता है।

अतः यह स्पष्ट रूप से दर्शनीय है कि शिवमूर्ति तथा सानु लामा दोनों ही कहानीकारों की कहानियों में कृषक समाज की आर्थिक विपन्नता, बेरोज़गारी, शोषण तथा सामाजिक विडम्बनाओं का उल्लेख दर्शनीय है। जिस परिदृश्य में हिन्दी तथा नेपाली समाज के ग्रामीण जनमानस का यथार्थवादी दर्शन मिलता है। सामाजिक परिवेश-परिस्थिति की भिन्नता होने के पश्चात् भी कृषक वर्ग की संवेदना की दृष्टि से सानु लामा तथा शिवमूर्ति की चेतना समान रूप से दृष्टिगोचर है। इस परिप्रेक्ष्य में सानु लामा की अर्ध खुला ढोका, फुर्बाले गाँउ छौड़यौ, कथा सम्पद् तथा शिवमूर्ति की सिरी उपमा जोग, अकाल दंड, केशर कस्तूरी आदि कहानियां दर्शनीय है।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष स्वरुप यह दर्शनीय है कि भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में आधे से अधिक भारतीय आबादी निवास करती है। भारतीय ग्रामीण समाज में कृषक वर्ग का स्थान आधार स्तंभ के रूप में ज्ञात होता है। कृषक वर्ग के अभाव में भारतीय समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है।

यद्यपि कृषक जीवन में अनेक विसंगतियां-विकट समस्याएं विद्यमान हैं जो कृषक वर्ग को आर्थिक रुप से हाशिये पर ले जाते दृष्टिगोचर है। इस परिप्रेक्ष्य में न केवल हिन्दी प्रदेश का ग्रामीण समाज अपितु सिक्किम का नेपाली भाषी समाज भी दर्शनीय है। जहाँ स्थानीय ग्रामीण कृषक वर्ग सूदखोरी, सामंती व्यवस्था, भ्रष्टाचार, प्रशासन की अनदेखी, प्राकृतिक आपदा तथा पंचायती व्यवस्था में व्याप्त षड्यंत्रों के कारण निरंतर संघर्षरत है। फलतः शिवमूर्ति तथा सानु लामा की कहानियों में कृषक समाज का विषमताओं से सन्निहित जीवन अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ता दृष्टिगोचर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी, पृष्ठ-55, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2015 ई.
2. शिवमूर्ति, कुच्ची का कानून, पृष्ठ-14, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017 ई.
3. त्रिपाठी, कल्पना, सानु लामाका कथामा समाज, पृष्ठ-44, विनायक प्रकाशन, सिलीगुड़ी, संस्करण-2016ई.
4. लामा, सानु, दुख्नु उत्तिकै छ, पृष्ठ-25, बुक-आन्ट, सालबारी पश्चिम बंगाल, संस्करण-2022 ई.
5. लामा, सानु, मृगतृष्णा, पृष्ठ-22, सिक्किम साहित्य परिषद्, गंगटोक, संस्करण-1990 ई.
6. शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी, पृष्ठ-130, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2015 ई.